HISTORY

B.A.PART-II (Subs)

Paper-II (Mughal period)

Unit-I, (Empire Expansion Of Jahangir)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 62

"जहांगीर का साम्राज्य विस्तार"

(Empire Expansion of Jahangir)

जहांगीर ने उन्हीं प्रदेशों को जीतने पर विशेष बल दिया जिसको अकबर के समय में पूर्णतः विजित नहीं किया गया था।

कन्धार (1606-1607):-

जहांगीर ने फारसियों से 'भारत का सिंहद्वार कहे जाने वाले साथ ही व्यापार एवं सैनिक दृष्टि से महत्वपूर्ण प्रांत कंधार को जीता।

मेवाड़ से युद्ध एवं संधि:-

अकबर के पूरे प्रयास के बाद भी मेवाड़ पूर्णतः महिलाओं के अधिकार में नहीं आ सका । राणा प्रताप ने अपनी मृत्यु के पूर्व ही लगभग 1597 तक अकबर के कब्जे से अधिकांश मेवाड़ के क्षेत्रों पर पुनः कब्जा कर

Dr Guddy kumari (A.N.D College)

लिया था । राणा प्रताप की मृत्यु के बाद उसका उत्तराधिकारी 'अमर सिंह' मेवाड़ के सिंहासन पर बैठा । अकबर की मृत्यु के बाद जहांगीर मुगल सिंहासन पर बैठा । जहांगीर ने अपने शासन काल के प्रथम वर्ष 1605 में मेवाड़ को जीतने के लिए अपने पुत्र शाहजादा परवेज के नेतृत्व में लगभग 20000 अश्वारोहियों की सेना को भेजा, सामरिक सलाह के लिए आसफ खा एवं जफर वेग को परवेज के साथ भेजा गया । राणा अमरसिंह एवं परवेज की सेनाओं के मध्य वेवार के दर्रे में संघर्ष हुआ, संघर्ष का कोई परिणाम नहीं निकल सका । खुसरो के विद्रोह के कारण परवेज को वापस बुला लिया गया।

1608 में 'महावत खां' के नेतृत्व में एक बड़ी मुगल सेना, जिसमें लगभग 12000 घुड़सवार सानिक थे, को भेजा गया। महावत खां ने राणा अमर सिंह को समीप की पहाड़ियों में छिपने के लिए मजबूर किया।

1609 में महावत खां के स्थान पर अब्दुल्ला खां को मुगल सेना का नेतृत्व करने के लिए भेजा गया । इसने 1611 में 'रनपुर के दर्रे में राजकुमार 'कर्ण' को परास्त किया, परन्तु रणघुरा के संघर्ष मे अब्दुल्ला खा को पराजय का सामना करना पड़ा । तत्पश्चात राजबसु को भेजा गया परन्तु उसे भी पराजय का सामना करना पड़ा। बसु के बाद मिर्जा अजीज कोका को भेजा गया, खुद जहांगीर अपने प्रभाव से शत्रु को आतंकित करने के लिए 1613 में अजमेर गया । इस समय जहांगीर ने

Dr Gundy kumari (A.N.D.College)

मेवाड़ के आक्रमण का भार शाहजादा खुर्रम को दिया । शाहजादा खुर्रम के नेतृत्व में मुगल सेना के दबाव के सामने मेवाड़ की सेना को समझौते के लिए तैयार होना पड़ा। राणा के राजदूत 'शुभकरण एवं हरिदास का जहांगीर के राजदरबार में यथोचित सत्कार किया गया । राणा अमर सिंह की सन्धि शर्तो पर जहांगीर संधि के लिए तैयार हो गया। 1615 में सम्राट जहांगीर एवं राणा अमर सिंह के मध्य संधि सम्पन्न हुई।

संधि की शर्तें --- राणा अमर सिंह एवं जहांगीर के मध्य हुई संधि की शर्तें इस प्रकार हैं-

1. राणा ने मुगलों की अधीनता स्वीकार की।

2. अकबर के शासन काल में जीते गये मेवाड़ के क्षेत्रों एवं चित्तौड़ के किले राणा को वापस मिल गये। चित्तौड़ के किले को और मजबूत करने एवं उसकी मरम्मत पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया ।

3. राणा पर मुगलों से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करने के लिए दबाव नही डाला गया। राणा को अपने स्थान पर मुगल सेना में अपने पुत्र कर्ण को भेजने की छूट मिली।

युवराज कर्ण को मुगल दरबार में पूर्ण सम्मान के साथ बादशाह के दाहिनी ओर स्थान मिला साथ ही 5,000 सवार' एवं 5,000 जाता का मनसब प्रदान किया गया।

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

इस तरह से लम्बे अर्से से चलने वाला संघर्ष दोनों पक्षों की राजनीतिक सुझ-बुझ के कारण समाप्त हो गया। जिसमें जहांगीर एवं उसके पुत्र खुर्रम की महत्वपूर्ण भूमिका रही। सम्राट जहांगीर ने सन्धि का पालन करते हुए मेवाड़ के प्रति पूर्ण उदार दृष्टिकोण के साथ उसके (राणा के) व्यक्तिगत मामलों में हस्तक्षेप नहीं किया। जहांगीर के शासन काल की यह महत्वपूर्ण उपलब्धि थी।

दक्षिण की विजय:---

जहांगीर की दक्षिण विजय अकबर की अग्रगामी नीतियों का अनुसरण मात्र थी। जहांगीर के सामने लक्ष्य था खानदेश एवं अहमदनगर की पूर्ण विजय, जिसे अकबर की मृत्यु के कारण पूरा नहीं किया जा सका था, साथ साथ स्वतन्त्र प्रदेश बीजापुर एवं गोलकुंडा' पर भी अधिकार करना था।

अहमदनगर- जहांगीर के समय में दक्षिण विजय में महत्वपूर्ण रुकावट था। अहमद नगर का योग्य एवं पराक्रमी बजीर मलिक अम्बर। यह अबीसानिया निवासी बगदाद के बाजार से खरीदा गया एक गुलाम था, जिसे अहमद नगर के मंत्री मीरक दबीर चंगेज खां ने खरीदा। अहमद नगर की सेना में रहते हुए मलिक अम्बर ने अनेक सैनिक एवं असैनिक सुधार किये । इसने टोडरमल की लगान व्यवस्था से प्रेरणा ग्रहण कर अहमद नगर में भूमि सुधार किया । इसने सैनिक सुधार के अन्तर्गत निजामशाही सेना में मराठों की भर्ती कर 'गुरिल्ला युद्ध पद्धति की

Dr Guddy kumari (A.N.D College)

शुरुआत की। इसने अपनी राजधानी को कई स्थानों पर स्थानांतरित किया। पहले परेन्द्रा से जुनार फिर जुनार से दौलताबाद अंततः 'खिर्की को अपनी राजधानी बनाया। मलिक अम्बर ने जंजीरा द्वीप पर निजाम शाही नौसेना का गठन किया । उसकी बढ़ती हुई शक्ति को कुचलने के लिए मुगल सेना ने अहमद नगर पर सैन्य अभियान प्रारम्भ किया। सैन्य अभियान के अन्तर्गत सम्राट जहांगीर ने 1608 ई में अब्दुल रहीम खानखाना को, 1610 में आसफ खां के संरक्षण में शहजादा परवेज को, इनके बाद खान जहाँ लोदी एवं अब्दुल्ला खा को भेजा पर ये अबीसीनियन मंत्री 'मलिक अम्बर' पर सफलता प्राप्त करने में असमर्थ रहे । अन्त में 'नूरजहाँ' की सलाह पर 1616 में जहाँगीर ने शाहजादा खुर्रम को दक्षिण अभियान के लिए शाह सुल्तान की उपाधि देकर भेजा। शहजादा खुर्रम की शक्ति से भयभीत मलिक अम्बर युद्ध किये बिना सन्धि करने के लिए सहमत हो गया। दोनों के बीच निम्नलिखित शर्तों पर 1617 में संधि हुई।

सन्धि की शर्ते-- पहले मुगलों के कब्जे वाला प्रान्त बालाघाट पुनः मुगलो को प्राप्त हो गया । अहमद नगर के दुर्ग पर मुगलों का कब्जा हो गया । सोलह लाख रुपये मूल्य के उपहार के साथ बादशाह आदिल शाह खुर्रम की सेवा में उपस्थित हुआ । खुर्रम की इस महत्वपूर्ण सफलता से खुश होकर सम्राट जहाँगीर ने उसे शाहजहाँ' की उपाधि प्रदान

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

की। बीजापुर के शासक आदिल शाह को जहागीर ने फर्जन्द' (पुत्र) की उपाधि प्रदान की । खान खाना को दक्षिण में सुबेदार बनाया गया ।

मलिक अंबर ने बीजापुर एवं 'गोलकुण्डा' से समझौता कर 1620 में संधि की अवहेलना करते हुए अहमदनगर किले पर आक्रमण कर दिया । शाहजहां जो उस समय पंजाब के कांगड़ा के युद्ध में व्यस्त था, जहांगीर के अनुरोध पर पुनः दक्षिण आया। शाहजहां एवं मलिक अम्बर के मध्य 1621 में दोबारा संधि हुई। इस संधि के पश्चात् शाहजहां को उपहार के रूप में अहमद नगर, गोलकुण्डा, बीजापुर एवं कुछ अन्य सीमावर्ती क्षेत्रों के शासको से करीब 64 लाख रु० मिले। 1621 में खुर्रम ने लोकप्रिय शहजादे खुसरो की हत्या करवा दी, उसकी असामयिक मृत्यु से पूरा देश स्तब्ध रह गया था।

कन्धार की हार (1622):--

कंधार को लेकर बहुत समय से मुगलों और फारसियों में संघर्ष चल रहा था। 1621 में एक विशाल सेना के साथ शाह अब्बास ने कंधार पर आक्रमण कर 1622 में अधिकार कर लिया । शाहजहां के विद्रोह के कारण जहांगीर की कंधार विजय की महत्वाकांक्षा अपूरी रह गई।

कांगड़ा विजय (1620):--

शाहजिदा खुर्रम के प्रतिनिधित्व में राजा विक्रमाजीत ने इस किले पर अधिकार कर लिया।

Dr Guddy kumari (A.N.D College)

जहांगीर की लघु विजय :--

1610 ई० में कुतुब नामक एक युवक ने खुसरो के नाम से पटना में संकट उत्पन्न कर दिया। जहाँगीर ने कुत्ते के विद्रोह का शीघ्र ही शान्त कर दिया।

उड़ीसा में खुर्दा के शासक पुरुषोत्ताम दास ने विद्रोह की घोषणा की। खुर्दा में ही जगन्नाथ का प्रसिद्ध मन्दिर था। टोडरमल का पुत्र राजा कल्याण सिंह ने पुरुषोत्तम को युद्ध मे पराजित कर अपनी पुत्री को राजकीय हरम में भेजने के लिए विवश कर दिया। बिहार के जंगली क्षेत्र खोखर के राजा दुर्जन साल का विद्रोह भी 1615 ई में शान्त कर दिया गया और हीरा के खान पर मुगलों का अधिकार हो गया। 1617 ई० में पुस्षोत्तम ने विद्रोह की घोषणा खर्दा में की। किन्तु उड़ीसा के सूबेदार मुकर्रम खाँ ने उसे शान्त कर दिया। खुर्दा विजय से मुगल राज्य की सीमा गोलकुण्डा को छूने लगी। कच्छ में जाम और बहरा जाति के विद्रोह को राजा विक्रमजीत ने शान्त कर दिया।

काश्मीर के दक्षिण किस्तवर का छोटा-सा राज्य था। फल और केशर के लिए किस्तवर प्रसिद्ध था। अकबर ने कश्मीर-विजय के बाद किस्तवर पर आक्रमण किया था, किन्तु उसे सफलता नहीं मिली। अतः 1620 ई. में काशमीर के सूबेदार दिलावर खां ने किस्तवर पर अधिकार कर लिया और वहाँ के राजा को बन्दी बनाकर जहाँगीर के सामने उपस्थित किया। दिलावर खाँ की नीति से क्षुब्ध होकर किस्तवर की जनता ने 1622 ई०

Dr Gudu Kumari (A.N.D College)

में विद्रोह कर दिया। विद्रोह दबा दिया गया और उसी वर्ष किस्तवर मुगल साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया गया। किस्तवर का राज्य छोटा था, किन्तु उसकी वार्षिक आय 1,00,000 रुपये थी।

इस प्रकार जहाँगीर द्वारा मुगल साम्राज्य के विस्तार के लिए किये गये प्रयास आंशिक रूप से सफल रहे।

धन्यवाद

Dr Guddy kumari (A.N.D College)